आज की कहानी

6 दिसंबर 2008 की शाम। एक वयोवृद्ध सज्जन ने फोन पर मुझे बताया कि "राजस्थान में बी-जे-पी को सरकार बनाने के लिए कुछ सीटें कम पड़ रही हैं। अब तो उन्हें पूरी "मेजॉरिटी" (बहुमत) मिलनी चाहिए थी। उन्होंने अपना चुनाव "कैम्पेन" ढंग से नहीं किया। बी-जे-पी भी तो आजकल सिक्यूलर-वादियों की तरह बातें करती है"।

अब तो उन्हें पूरी "मेजॉरिटी" मिलनी चाहिए थी की बात पर मुझे ख्याल आया कि उनका संकेत मुंबई के ताज होटल पर तथाकथित आतंकवादियों के हमले की तरफ़ रहा होगा। जी हाँ, मैंने तथाकथित शब्द का प्रयोग किया है "तथाकथित आतंकवादी"! कहते हैं (अ) आतंकवादियों का कोई मज़हब नहीं होता (ब) आपको यह नहीं सोचना कि वे सभी मुसलमान होते हैं (स) उनका मुसलमान होना महज़ एक इत्तफ़ाक है!

कुछ हद तक सही भी है। स्वनामधन्य एम-जे-अकबर की नज़रों से देखिए इसे। एक सज्जन के लेख में पढ़ा कि "द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया" ने 30 नवंबर 2008 के अंक में एम-जे-अकबर का एक महत्वपूर्ण लेख छापा। उस लेख में एम-जे-अकबर ने "हिन्दू आतंकवादियों" का ज़िक्र किया "नक्सलपंथियों" को हिन्दू बताकर। हम इतना तो जानते हैं कि एम-जे-अकबर किसी मूरख का नाम नहीं है जिसे यह भी न मालूम हो नक्सलवाद "कॉम्यूनिज़्म" की उपज है और कॉम्यूनिज़्म में ईश्वर को इतिहास की वस्तु माना जाता है अर्थात कॉम्यूनिज़्म के अनुसार "अतीत में कभी ईश्वर का अस्तित्व रहा होगा पर आज नहीं है"। क्या ऐसे पंथ के अनुयायी "हिन्दू" कहला सकते हैं? एम-जे-अकबर को भी मालूम है कि इसका एक ही उत्तर हो सकता है - नहीं। फिर भी उसने "हिन्दू आतंकवाद" को नक्सलपंथ में खोज निकाला। जब मानव धूर्तता पर ही उतर आये तो उसकी कल्पनाशक्ति बड़ी तेज हो जाती है। धूर्तों की जमात बड़ी लंबी होती है। जब चेन्नई के प्रभाकर ने एम-जे-अकबर के कथन पर टिप्पणी करते हुए बड़े ही संयत रूप से, तर्क द्वारा एवं वाक-संयम का प्रयोग करते हुए "द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया" के संपादक को अगले ही दिन (1 दिसंबर 2008) पत्र लिखा तो उसे प्रकाशित नहीं किया गया। आखिर एम-जे-अकबर गलत कैसे हो सकते हैं?

उसी लेख में एम-जे-अकबर ने इस बात की घोषणा भी की, कि "उन्हें गर्व है कि वह एक भारतीय मुसलमान हैं"। अपने इस गौरव-बोध के पक्ष में पैरवी करते हुए उन्होंने "छद्म-मार्क्ससिस्ट" मनमोहन सिंह के कथन को पेश किया "हमारे प्रधानमन्त्री महोदय ने कहा है कि भारतीय मुसलमानों में कोई भी आतंकवादी नहीं है"। एम-जे-अकबर जो "एशियन एज" नामक अंग्रेज़ी दैनिक समाचार पत्र के संपादक हुआ करते थे, शायद अब मेरी तरह कोई अखबार नहीं पढ़ते। यही कारण होगा कि उन्हें नहीं मालूम कि भारतीय मुसलमानों में अनगिनत ऐसे भी हैं जिनके सहारे उन पाकिस्तानी आतंकवादियों ने यह जाना था कि ताज होटल का अन्दरूनी नक्शा क्या है, इतनी बारीकी से कि उन्हें ताज के चप्पे-चप्पे की जानकारी थी - इतनी सारी जानकारी जितनी हमारे उन जवानों को भी न थी जिन्होंने अपनी जान जोखम में डालकर उन पाकिस्तानी मुसलमानों से लोहा लिया जिन्हें हम आतंकवादी कहते हैं ताकि आम हिन्दू समझे कि उनका उद्देश्य महज आतंक फैलाना है, काफ़िर हिन्दुओं का कत्लेआम करना नहीं (यह अलग बात है कि उन पाकिस्तानी मुसलमानों - तथाकथित आतंकवादियों - ने ताज होटल में ठहरे तुर्की मुसलमानों को बंधक नहीं बनाया, जाने दिया, उन्हें बेरहम मौत नहीं मारा, जबकि काफ़िर हिन्दुओं को मारते वक्त उन आतंकवादी मुसलमानों ने मर्द, औरत, बच्चों में फ़र्क नहीं किया (और करते भी क्यों - उन बच्चों को आज मौत के घाट न उतारा तो कल बड़े होकर ये मूर्तिपूजक काफ़िर ही बनेंगे तथा कई नए मूर्तिपूजक काफ़िर बच्चे पैदा करेंगे - क्यों न कली को फूल बनने से ही पहले मसल डालो)। इसीलिए तो हमारे एम-जे-अकबर कहते हैं, सभी के मन को

मोहने वाले छोटे-से सिंह जी कहते हैं, और जाने कितने बड़े-बड़े दिग्गज कहते हैं कि आतंकवाद का कोई मज़हब नहीं होता, वह तो केवल आतंकी होता।

वैसे हमारे एम-जे-अकबर ने एक बड़े पते की बात कही। उन्होंने ईसाई आतंकवादियों का भी ज़िक्र किया। साथ ही वह सिक्ख आतंकवादियों के बारे में भी बोल पड़े। शायद उन्हें "मज़हबी अतंकवादियों" या फ़िर "आतंकवादी मज़हबों" की सूची लंबी करनी थी ताकि एक अकेला मुसलमान ही आतंकवादी के रूप में न उभरे। यदि अकेला मुसलमान ही आतंकवादी के रूप में उभरता, तो एम-जे-अकबर कैसे कहते कि मैं मुसलमान होने में गर्व अनुभव करता हूँ। बिचारे एम-जे-अकबर करते भी तो क्या - जबसे "बिन लादेन" ने "जॉर्ज बुश" के जाँघों के बीच लात मारी तो उस दर्द से कराहता अमरीका अपने धराशायी "ट्विन वर्ल्ड टावर सेन्टर" की कसम खाकर ज़िहादी मुसलमानों के खिलाफ़ "ईसाई क्रूसेड" का ऐलान कर बैठा। "सी-एन-एन" और जाने कितने मीडिया दिग्गज जुट गए मुसलमानों को बदनाम करने। अचानक उन सभी को एहसास होने लगा कि मुसलमान तो "टेररिस्ट" है। 9/11 के पहले वही अमरीका, कश्मीर में हो रहे लाखों भारतीय हिन्दू ब्राह्मणों के, मुसलमानों द्वारा कत्लेआम को, नज़रन्दाज़ करता रहा। "बिन लादेन" तो "नौ-दो-ग्यारह" हो गया पर अमरीकी ईसाइयों ने तय कर लिया अब हम "अपने चचेरे भाई" मुसलमानों को सारी दुनिया में रुसवा करके ही छोड़ेंगे।

चौंकिए मत "चचेरे भाई" की संज्ञा पर। जी हाँ, यहूदी, ईसाई और मुसलमान - ये तीनों ही एक ही पिता "अब्राहम" के बच्चे हैं। विश्वास न हो तो उठाकर देख लीजिए यहूदियों का टॉर'अ, ईसाइयों का बाइबिल और मुसलमानों का कुराण। तीनों की रगों में दौड़ता पायेंगे उसी एक अब्राहम का खून। उन सब के अपने ही दस्तावेज़ दावा करते हैं इस बात का। हम हिन्दू तो चचेरे भाई को भी भाई ही मानते हैं "चचेरा" नहीं कहते जब किसी से उसका परिचय कराते हैं। पर यहूदी, ईसाई और मुसलमान तो उन्हें भाई नहीं बल्कि "चचेरा" ही मानते हैं। ईसाई तो चचेरे (कज़िन) पर ही नहीं रुकते, वे तो एक कदम आगे बढ़ कर और भी फ़र्क करते हैं - फ़र्स्ट कज़िन, सेकन्ड कज़िन, इत्यादि - यह जताने के लिए कि रिश्ता कितना लंबा है (दरअसल वे यह नहीं जताते कि रिस्ता कितना "लंबा" है, वे यह जताते हैं कि इस भ्रम में न रहो कि सिर्फ़ "चचेरा" है बल्कि यह भी गिनते जाओ कि रिश्ता कितना करीब "नहीं" है!) और मुसलमान का तो कोई सानी ही नहीं, वह तो दूरी गिनना शुरू करता है अपने ही बाप के बेटों में, उसे चचेरा जितना लंबा जाने की जरूरत नहीं होती (जभी तो औरंगज़ेब ने अपने भाई मुराद को कुत्तों का नाश्ता बना दिया!) अब हिन्दू बिचारा इन यवनों के साथ रहते-रहते कुछ इतना बिगड़ चुका है कि अब सुधरने जैसा नहीं रह गया। इसीलिए बड़े-बूढ़े कहा करते कि बुरी संगत का असर बुरा ही होता है। आज हम उन्हें दकियनूसी कहेंगे क्योंकि हम वह योग्यता ही खो चुके हैं कि यह समझ सकें कि म्लेच्छों की बुरी संगत हमें पतन के किस गर्त में ढकेल सकती है।

खैर, लौट चलें उस ओर जहाँ से भटक कर हम आये इस ओर। तो हम इस बात पर गौर कर रहे थे कि एम-जे-अकबर (ईसाई अमरीकियों द्वारा सारे जहाँ में रुसवा किए गए) मुसलमान को अकेला आतंकवादी करार दिए जाने के विरोध में, आतंकवादियों की फेहरिस्त (लिस्ट/सूची) को बड़ा करने के चक्कर में हिन्दू को भी लपेट कर, फिर ईसाई आतंकवादी की बात करने लगे। यहाँ उनका इशारा था "पूर्वोत्तर भारत" के विभिन्न राज्यों की ओर जहाँ ईसाई मिशनरियों ने जाकर पहले वहाँ के लोगों को ईसाई बनाया, फिर उन "धर्मपरिवर्तित ईसाइयों" के हाथ बन्दूक थमायी और उन्हें "हिन्दुओं का कत्ल" करने को उकसाया, "हिन्दू मन्दिरों को तोड़ना" सिखाया - इस प्रकार प्रकृति की गोद में सदियों से बसने वाले मानवों को जानवर बनाया। जो वहाँ की स्थिति से परिचित हैं वे यह भी जानते हैं

कि वहाँ के ईसाई मिशनरी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे "यह भी नहीं ज़ानते" कि उनका राज्य भारत का अंग़ है। ये बच्चे बड़े होंगे़और जैसे-ज़ैसे उनकी संख्या एवं शक्ति बढ़ेगी उन्हें उकसाया जायेगा एक स्वतंत्र राज्य की माँग़ करने के लिए – एक ऐसा स्वतंत्र राज्य जो "भारत के अधीन" न हो – नागालैण्ड तो राह दिखा ही चुका है, केवल उसे अंजाम नहीं दे पाया है अभी तक पर समय के साथ वह भी हो जायेगा।

राजीव गाँधी ने हिन्दुओं को नहीं बताया कि वह पुत्र थे मुसलमान पिता के (फ़िरोज़ गाँधी) जिसे पारसी कह कर प्रस्तुत किया गया "नाम-परिवर्तन" (खान से गाँधी) के बाद! राजीव गाँधी ने हिन्दुओं को यह भी नहीं बताया कि उन्हें ईसाई बनना पड़ा सोनिया से शादी करने से पहले। राहुल गाँधी और प्रियंका ने हिन्दुओं को यह नहीं बताया कि वे जन्में हैं ईसाई माता-पिता (सोनिया-राजीव) से और आज भी ईसाई ही हैं। प्रियंका ने शादी की है ईसाई से और उनके बच्चे भी ईसाई ही हैं। राहुल की प्रेमिका ईसाई है और शादी के बाद उनके बच्चे भी ईसाई ही होंगे। सोनिया आज भारत की साम्राज्ञी हैं और कल राहुल-प्रियंका तथा उनके बच्चे भी भारत के सम्राट/साम्राज्ञी की गद्दी संभालेंगे। तब एक-एक कर उन सभी पूर्वोत्तर भारत के धर्मान्तरित ईसाई बहुल राज्य भी भारत से टूट कर स्वतंत्र ईसाई राज्य बन जायेंगे। धीरे-धीरे झारखण्ड भी उसी ओर अग्रसर हो रहा है। इन सब को अपने-अपने अंजाम तक पहुँचने के लिए कुछ पीढ़ियाँ तो लग ही जायेंगी, अतः आप चैन की नींद सो सकते हैं।

आप टी-वी सीरियल तो देखते ही होंगे, बच्चे माता-पिता को मॉम-डैड कहकर बुलाते हैं जो है ईसाई संस्कृति की देन। वही मॉम-डैड बच्चों की सगाई पर उन्हें एक-दूसरे को अंगूठी पहनाने को कहते हैं जो है एक ईसाई प्रथा, अंतर केवल इतना है कि हम ईसाइयों की तरह शादी के समय अंगूठी पहनाने के रिवाज को अभी तक (माला पहनाने के स्थान पर) अपनाने में लजाते हैं, सो माला बदलने के पहले ही सगाई के वक्त हम इसे निपटा लेते हैं। ताज होटल पर पाकिस्तानी मुसलमानों के आक्रमण के बाद बच्चे टी-वी पर कैन्डेल (मोमबत्ती या मेमबत्ती) जलाते हुए दिखते हैं दिया जलाने के बजाय। ऐसे न जाने कितने ही उदाहरण पेश किए जा सकते हैं जिनसे हमारे हिन्दू समाज के ईसाई-करण की (परोक्ष) प्रक्रिया झलकेगी। समय के साथ पहले जन-जीवन का ईसाई-करण होगा तथा उसके पश्चात राष्ट्र का भी ईसाई-करण होगा।

आप देखते हैं कि एम-जे-अकबर ईसाई आतंकवाद की ओर ईशारा करते हुए गलत नहीं थे, केवल पक्के अवसरवादी थे (वैसे, ऐसे अवसरवादी को नैतिक रूप से ईमानदार तो नहीं कहा जा सकता, हाँ यह अलग बात है कि मुसलमानों में ईमानदारी की परिभाषा कुछ और ही होती है - यह सत्य है उस अकबर के बारे में भी जिसे दुनिया "महान" कहती है, तो फिर यह केवल "एम-जे" है)। एम-जे-अकबर को ईसाई आतंकवाद तब न दिखा था जब वह "एशियन एज" के नामी संपादक थे। तब वे इसे "अल्ट्रा" की संज्ञा देकर हिन्दुओं की नजरों से छुपा कर रखते थे। जब बात हिन्दू और ईसाई के बीच हो तो हिन्दू "काफ़िर" व ईसाई "चचेरा" जो होता है। पर अब जब "एक चचेरे" ने ठेल दिया "दूसरे चचेरे" को एक कोने में तब चचेरा-चचेरा गया भाड़ में और जरूरी हो गया उन्हें अपनी लाईन में खड़ा करने की।

"अल्ट्रा" तो एक धोखा था हिन्दू के भोलेपन का फ़ायदा उठाने के लिए और इस खेल में केवल "एशियन एज" के संपादक ही शामिल नहीं थे बल्कि उससे भी बड़े-बड़े दिग्गज इसी एक बड़े झूठ का अंग थे - एक सोची समझी झूठ - एक षड़यंत्र - अनेक षड़यंत्रों की सूची में बस एक और षड़यंत्र - पर एक ऐसा षड़यंत्र जिसका एकमात्र उद्देश्य है हिन्दू से उसका अस्तित्व छीन लेना - कहानी बड़ी लंबी है जिसकी पहली झलक हमें देखने को मिली आज से कोई पचास वर्ष पहले 1956 में जब मध्य प्रदेश सरकार ने एक कमिटी गठन की एवं उसकी बागडोर सौंपी अवकाश-

प्राप्त न्यायाधीश जस्टिस नियोगी को। उनकी रिपोर्ट हमें बताती है (प्रमाण सहित) कि द्वितीय विश्वमहायुद्ध के बाद "घोषित ईसाई नीति" का "भारत के संदर्भ में" स्पष्ट उद्देश्य रहा है (1) राष्ट्रीय एकता को रोकना (2) भारतीय संविधान में धर्म-प्रचार की स्वतंत्रता का लाभ लेते हुए एक ईसाई राजनैतिक पार्टी का गठन करना जिसका उद्देश्य होगा मुस्लिम लीग की तरह "राष्ट्र-विभाजन" (हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की तरह) की माँग करना, अन्यथा (अर्थात यह संभव न हो पाये तो) कम-से-कम एक "मिलिटैन्ट माइनॉरिटी" (अर्थात युद्धरत अल्पसंख्यक वर्ग) को उत्पन्न करना। नियोगी कमिटी रिपोर्ट हमें बताती है कि इसी प्रकार "झारखण्ड" बनेगा, जो आगे चलकर बनी भी।

नियोगी कमिटी की रिपोर्ट जब सामने आयी तो हर वह कोशिश की गई कि इसे दफना दिया जाये। इस प्रक्रिया में योगदान दिया विभिन्न शक्ति-केन्द्रों ने, उदाहरण के लिए -

सितंबर 1956 में नेहरू सरकार के मुखपात्र बी-एन दातार (मिनिस्टर ऑफ़ स्टेट फ़ॉर होम अफ़ेयर्स) ने संसद में घोषणा की कि "ईसाई मिशनरियों की गतिविधि को रोकने के लिए कोई भी कदम नहीं उठाया जायेगा"।

2 दिसंबर 1978 को जनता पार्टी के सदस्य ओम प्रकाश त्यागी ने "ईसाई मिशनरियों की राष्ट्र-द्रोही गतिविधियों" को रोकने के उद्देश्य से लोक सभा में एक विधेयक प्रस्तुत किया। कुछ ही महीनों बाद मुरारजी सरकार गिर गई, कॉन्ग्रेस सरकार बनी, विधेयक पर चर्चा भी न हो सकी।

1982 की ग्रीष्म ऋतु तक नियोगी कमिटी रिपोर्ट की एक भी प्रति सरकारी विक्रय केन्द्रों में बची न थी कारण ईसाई मिशनरियों ने हर उपलब्ध प्रति को खरीद कर नष्ट कर दिया था। पुस्तकालयों में एक भी प्रति बची न रही कारण उन्हें पढ़ने के लिया गया पर लौटाया न गया।

इस बात को दफ़नाने की अंतिम रस्म पूरी की गई बी-जे-पी के तत्कालीन अध्यक्ष लाल कृष्ण अदवानी के द्वारा जिन्होंने 4 मई 1997 को चेन्नई में एक प्रेस इन्टर्व्यू (पत्रकार साक्षात्कार) के दौरान "बी-जे-पी की नीति" घोषणा की इन शब्दों में "उनकी पार्टी धर्मान्तरण पर रोक हेतु वैधानिक प्रक्रिया में विश्वास नहीं रखती" अर्थात बी-जे-पी किसी भी ऐसे कानून को पास कराने में मदद नहीं करेगी जो धर्मान्तरण की प्रक्रिया पर रोक लगाये।

इन विषयों पर विस्तार से चर्चा पायेंगे "हिन्दू वॉइस" द्वारा मेरी सर्वप्रथम (मार्च 2003) प्रकाशित 140 पृष्ठ की अंग्रेज़ी पुस्तक "ऐराइज़ अर्जुन - अवेकन माई हिन्दू नेशन" अर्थात "उठो अर्जुन - जागो मेरे हिन्दू राष्ट्र" एवं उससे भी अधिक विस्तार में (308 पृष्ठ) एवं अनेक नये प्रमाणों सहित मेरी दसवीं पुस्तक (25 जून 2005) "दैट अननोन फ़ेस ऑफ़ क्रिस्चियानिटी" अर्थात "ईसाई धर्म का वह अनजाना चेहरा"।

अब लौट चलें वहाँ जहाँ से आरंभ हुई थी यह कहानी। बी-जे-पी को सरकार बनाने के लिए सीटें क्यों न कम पड़ेंगीं? यह सत्य है कि जब बी-जे-पी की सरकार केन्द्र में बनी थी तो उन दिनों "रोज़ सुबह-शाम" मुझे दौलत नगर (मुंबई) में भजन-कीर्तन लाउड-स्पीकर पर सुनने को मिलते थे जो बी-जे-पी की सरकार गिरने के बाद इतिहास बन कर रह गई है। इसका अर्थ केवल इतना ही था कि हिन्दू कम-से-कम खुलकर साँस तो ले सकता था, इससे अधिक नहीं। कुम्भ के दौरान नदी में डुबकी लगाने के लिए हिन्दू को कर देना पड़ता रहा, कैलाश-मानसरोवर यात्रा के लिए भी हिन्दू कर देता रहा। दूसरी तरफ़ मुसलमान को हज़्ज़ के लिए कर नहीं देना पड़ता बल्कि सरकार उसे कर देती आर्थिक सहायता के रूप में। उन्हीं दिनों बी-जे-पी को सरकार ने आर्थिक सहायता की राशि बढ़ा दी। तब एक हिन्दू को लगा कि बी-जे-पी सरकार के सरताज हिन्दू वोट के सहारे गद्दी संभालने के बाद

पलटी मार गए, सो उसने अपने एक लेख में बाजपाई की जगह उसे हज़पाई कह कर संबोधित किया जो मुझे कुछ उपयुक्त सा लगा।

इस प्रकार बी-जे-पी सरकार हिन्दू से कर लेकर मुसलमान को देती रही। यह एक प्रकार से ज़िज़िया हुआ कुछ वैसे ही जैसे सभी मुस्लिम सुल्तान हिन्दू से कर लेते रहे, हिन्दू को हिन्दू बने रहने देने के लिए, अन्यथा उसे मुसलमान बनना पड़ता। हिन्दू के दिए उस कर पर मुसलमान ऐश करते थे। विश्व में कोई पचास मुस्लिम राष्ट्र हैं पर एक भी मुसलमान को हज़्ज़ के लिए आर्थिक सहायता नहीं देता (सुना है कि सऊदी अरब तो हज़्ज़ के लिए भारतीय मुस्लमान से कर भी लेता है)। पर बी-जे-पी की दरिया-दिली देखिए, उन्होंने मुसलमानों को कॉन्ग्रेस सरकार से भी अधिक आर्थिक सहायता दी, हिन्दू से कर ऐंठ कर। अब तो होड़ लग गई है, जो भी केन्द्र में सरकार बनायेगा वह मुसलमान को और भी बढ़ा कर आर्थिक सहायता देगा, और उसकी भरपाई कौन करेगा - वही हिन्दू जो तब भी ज़िज़िया देता था और आज भी देता है, केवल नाम बदल गया है।

फिर वही प्रश्न - हिन्दू बहुमत दे तो क्यों दे बी-जे-पी को? बी-जे-पी ने हिन्दू को क्या दिया? केन्द्र में बी-जे-पी ने सरकार बनाई कैसे? राम मन्दिर का झूठा आश्वासन देकर। लाल कृष्ण अदवानी ने रथ यात्रा निकाली। गद्दी संभालने के बाद एक समय ऐसा आया जब एक-डेढ़ महीने तक हर हफ़्ते अटल बिहारी बाजपाई का स्टेटमेन्ट (कथन) "द फ्री प्रेस जरनल" के मुखपृष्ठ के ऊपरी भाग पर छपता रहा। एक हफ़्ते अटल बिहारी कहते राम मन्दिर बनेगा, अगले हफ़्ते कहते नहीं बनेगा। यह सिलसिला कुछ इतना नियमित रहा कि उसमें अटल बिहारी की एक विशेष अटलता झलकती रही, अपनी बात को बारी-बारी से बदलने में वह कितनी अटलता बरतते हैं!

प्रश्न यह है कि हिन्दू किसी को बहुमत दे भी तो क्यों दे? कौन है सगा उसका? ये सभी तथाकथित राजनीतिज्ञ चाहे पैदाइशी हों या न हों पर अपनी-अपनी नीति का पालन करते हुए नैतिक रूप से दोगले जरूर बन जाते हैं। आज के परिवेश में पला-बढ़ा, प्रजातंत्र की दुहाई देने वाला (या फिर प्रजातंत्र को दुहने वाला), राजतंत्र में हर खोट निकालने वाला तथा राजतंत्र को हर संभव ढंग से गलत साबित करने वाला, वह राजनैतिक व्यक्ति (या फिर कहें प्रजानीति में पारंगत), चाहे किसी भी राष्ट्र का क्यों न हो (छोटी-बड़ी मात्रा में), प्रजा के वोटों के बूते पर गद्दी संभाल, प्रजा के कैश पर ऐश करता हुआ, प्रजा का रक्षक कम, भक्षक अधिक होता है।